موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 3

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षकः

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े–क़िस्त 3

प्रथम उपदेशः

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन

आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमन तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैंःसूर में फूंक मारना,क़यामत की विशाल चिन्हें,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुणः उठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह जज़ा व सज़ा एवे हिसाब व किताब के विषय में चर्चा करेंगे।

1—अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा सत्य हैं जो कुरान व ह़दीस एवं मुस्लमानों की र्स्वसम्मति से सिद्ध हैं,इसके सिद्ध होने का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ * ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا **حِسَابَهُمْ**﴾

अर्थातःनिसंदेह हमारी ओर उन को लौटना है,फिर निसंदेह हमार ऊपर उनसे ह़िसाब लेना है।

तथा अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण है:

﴿مَن جَاء بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَن جَاء بِالسَّيِّئَةِ فَلاَ **يُجْزَى** إِلاَّ مِثْلَهَا وَهُمْ لاَ يُظْلَمُونَ﴾

अर्थातःजो व्यक्ति पुण्य का काम करेगा उसको उसके दस गुणा मिलेंग,और जो व्यक्ति पाप का कार्य करेगा,उसको उसके समान ही दंड मिलेगी और उन लोगों पर अन्याय न होगा।

1.और अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण है:

﴿وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئا وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا **حَاسِبِين**﴾

अर्थातःक़यामत के दिन हम बीच में ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय न किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के समान भी अ़मल होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

2.हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(पुण्य एवं पाप का बदला)अल्लाह की नीति का तक़ाज़ा भी है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पुस्तकें उतारीं,संदेशवाहकों को भेजा,और

बंदों पर यह फर्ज़ कर दिया कि वे उन संदेशवाहकों के लाए हुए संदेश को स्वीकार करें,जिस पर अ़मल करना अनिवार्य है,उस पर अ़मल करें,तथा अल्लाह के मार्ग में रोड़े एवं बाधा डालने वालों से युद्ध करना अनिवार्य है,उनका,उनकी संतान का और उनकी पत्नियों का रक्त एवं उनके धन को ह़लाल(वैध)बनाया,यदि हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(उपकार एवं दंड)न होता तो यह शरीअ़त बेकार एवं व्यर्थ होती जिस से नीति वाला पालनहार पवित्र एवं उच्च है।

3.अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब दो प्रकार के हैं:एक हिसाब व किताब जो केवल(कार्यों की)प्रस्तुति से निहित होगी।दूसरा हिसाब व किताब जिसमें पूछ गछ एवं यातना होगा,उसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:क़्यामत के दिन जिसके भी हिसाब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।

अ़यशा रज़ीअल्लाहु अंहा ने कहाःए अल्लाह के रसूल!क्या अल्लाह तअ़ाला ने स्वयं नहीं फरमायाः «فأما من أوتي كتابه بيمينه * فسوف يحاسب حسابا يسيرا»

कि"जिसका नामाए अ़माल(कार्य सूची)उसके दाएं हाथ में दिया गयाा तो जल्द ही उससे एक आसान हिसाब लिया जाएगा"।उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह तो केवल प्रस्तुति होगी।(अल्लाह तअ़ाला के कहने का तात्पर्य यह है कि)क़्यामत के दिन जिस के भी हिसाब व किताब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।[1]

इन दोनों प्रकार के हिसाब व किताब का उल्लेख इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा की इस ह़दीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह तअ़ाला मोमिन को अपने निकट बोला लेगा और उस पर अपना पर्दा डाल देगा[2]और उसे छुपा लेगा।अल्लाह तअ़ाला उससे फरमाएगाःक्या तुझको अमुक पाप याद है?क्या अमुक पाप तुझको याद है?वह मोमिन कहेगा हां,ए मेरे रब।अतः जब वह अपने पापों को स्वीकार करलेगा और वह सुनिश्चित हो जाएगा कि अप वह बर्बाद हो गया तो अल्लाह फरमाएगा कि में ने दुनिया में तेरे पापों पर पर्दा डाला।और आज भी में तुझे क्षमा प्रदान करता हूं,अतःउसे उसके पुण्यों की पुस्तक दे दी जाएगी।[3]

---

[1] इसे बोखारी(6537)और मुस्लिम(2876)ने आयशा नज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।

[2] अपना पर्दा डाल देगा,एक कथन यह है किःअपना कृपा एवं दया से उसे ढ़ांप लेगा।देखें:"अलनेहाया"

[3] इसे बोखारी(2441)और मुस्लिम(2768)ने वर्णित किया है।

2. 4—उस दिन लोगों के अ़माल(कार्यों)तराजू में तौले जाएंगे ताकि लोगों के सामने अल्लाह तआ़ला का न्याय प्रकट होसके,अल्लाह का कथन है:

﴿ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين﴾.

अर्थातः क़्यामत के दिन हम सामने ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय नहीं किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के बराबर भी अ़मल(कार्य)होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और हम प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

- यदि कोई यह प्रश्न किः पुण्य एवं पाप कैसे नापे जाएंगे जबकि वे मानवी(अस्पृश्य)वस्तु हैं?

तो इसका उत्तर यह है किः अ़माल(कार्यों)अल्लाह की ईच्छा से शारीरिक वस्तु में परिवर्तित हो जोएंगे,इसी प्रकार कार्यों के अतिरिक्त अन्य चोजें भी शारीरिक वस्तु का रूप धार लेंगे,उदाहरण स्वरूप मृत्यु को लेलें,वह एक अस्पृश्य वस्तु है,स्पृश्य नहीं,किन्तु क़्यामत के दिन उसे एक मेंढ़े के रूप में लाया जाएगा और स्वर्ग एवं नरक के बीच उसकी हत्या कर दी जाएगी,फिर पुकारा जाएगाः ए स्वर्ग वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है और नरक वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है।[4]

- और यदि कोई यह प्रश्न करे कि क्या समस्त मोमिनों एवं काफिरों के अ़माल(कार्यों)को तौला जाएगा,अथवा केवल मोमिनों के कार्यों को?तो इसका उत्तर यह है किः आखिरत में केवल मोमिनों के कार्यों को ही तौला जाएगा,अतः यदि मोमिन के नामाए अ़माल(कार्य सूची)में पाप नहीं पाए गए तो उसे आरंभ ही में स्वर्ग में दाखिल कर दिया जाएगा,और यदि उसके नामाए अ़माल में पाप पाए गए तो उसे उन पापों की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उसे स्वर्ग में दाखिल करदेगा,अथवा आरंभ ही में उसे क्षमा प्रदान कर देगा और बिना किसी यातना के स्वर्ग में दाखिल कर देगा,जिसक कारण अथवा शिफाअ़त(परामर्श)करने वालों का परामर्श होगा अथवा मात्र अल्लाह का कृपा एवं दया होगा।रही बात काफिर की तो उसके अ़मलों का नहीं तौला जाएगा,क्योंकि अल्लाह तआ़ला उसके कार्यों का बदला दुनिया ही में स्वास्थ्य अथवा जीविका में बढ़ोतरी आदि करके देदेता है,किन्तु जब आखिरत में अल्लाह के सामने होगा तो उसके लिए नरक की यातना के अतिरिक्त कुछ

[4] देखें:सह़ी बोखारी(4730)और मुस्लिम(2849)।

और न होगा,चाहे उसने दुनिया में कितनी ही भलाई एवं पुण्य ही क्यों न किए हों,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿أولئك الذين ليس لهم في الآخرة إلا النار وحبِط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون﴾

अर्थातःहां यही वे लोग हैं जिन के लिए आखिरत में सिवाए आग के और कुछ नहीं और जो कुछ उन्हों ने यहां किया होगा वहां सब बैकार है और जो कुछ उनके कार्य थे सब बरबाद होने वाले हैं।

तथा अल्लाह ने फरमायाः ﴿وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا﴾

अर्थातःऔर उन्हों ने जो जो कार्य किए थे हम ने उनकी ओर बढ़ कर उन्हें बिखरे हुए धूल एवं गर्दों के जैसा बना दिया।

अल्लाह ने और यह भी फरमायाः

﴿مثل الذين كفروا بربهم أعمالهم كرماد اشتدت به الريح في يوم عاصف لا يقدرون مما كسبوا على شيء﴾

अर्थातःउन लागों का उदाहरण जिन्हों ने अपने पालने वाले से कुफ किया,उनके कार्य उस राख के जैसे हैं जिस पर आंधी वाले दिन तेज़ हवा चले।जो भी उन्हों ने किया उसमें से किसी भी चीज पर समर्थ न होंगे।

एक और स्थान पर अल्लाह ने फरमायाः

﴿والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء حتى إذا جاءه لم يجده شيئا﴾

अर्थातःऔर काफिरों के आ़माल(कार्यें)उस चमकती हुई रेत के जैसे हैं जो चटयल मैदान में हो जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है किन्तु जब उसके निकट पहुंचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता।

सार यह कि काफिरों एवं मोनाफिकों(कपठियों)का हिसाब व किताब पापों एवं पुण्य में तुलना के लिए न होगा,बल्कि उनसे उनके पापों को स्वीकार कराया जाएगा और उनको डांटा फिटकारा जाएगा,जैसा कि इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में गुजरा,अतःउनसे उनके कार्यों को स्वीकार कराया जाएगा और उन्हें उनसे अवगत कराया जाएगा,यदि उन्हों ने अस्वीकार तो उनके शरीर के अंग उनके विरुद्ध गवाही देंगे,फिर भरे भीर में उन्हें पुकार कर कहा जाएगाः

﴿هؤلاء الذين كذبوا على ربهم ألا لعنة الله على الظالمين﴾

अर्थातःये वे लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूट कहा,सचेत रहो कि निर्दयों पर अल्लाह की लानत(श्राप)है।

उसके पश्चात उन्हें नरक में ढ़केल दिया जाएगा,अल्लाह का शरण।इससे यह ज्ञात होता है कि अल्लाह तआ़ला मोमिन के पापों पर पर्दा डाल देगा और काफिरों को(सरेआम)अपमानित करेगा।

5.मोमिनो!हिसाब व किताब का एक दृश्य यह भी होगा कि लोगों को जब हिसाब व किताब के लिए बोलाया जाएगा तो वे उदासी एवं निराशा से घुटनों के बल गिर जाएंगे,अल्लाह तआ़ला ने सूरह अलजासिया में फरमायाः

﴿وترى كل أمة **جاثية كلُّ أمة جاثية كل أمة تُدعى إلى كتابها** اليوم **تجزون** ما كنتم تعملون * هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون﴾

अर्थातःऔर आप देखेंगे कि प्रत्येक उम्मत घुटनों के बल गिरी होगी।प्रत्येक समूह अपने नामाए आ़माल की ओर बोलाए जाएंगा,आज तुम्हें अपने किए का बदला दिया जाएगा।यह है तुम्हारी पुस्तक जो तुम्हारे प्रति सत्य सत्य बोल रही है,हम तुम्हारे कार्यों को लिख्वाते जाते थे।

ए मोमिनो!स्र्वप्रथम बंदा से नमाज़ के प्रति हिसाब लिया जाएगा,यदि नमाज़ सही रही तो उसके समस्त कार्य सही होंगे,और यदि उसमें गड़बड़ी पाई गई तो समस्त कार्य बिगड़े हुए होंगे।

6.मानवों के अधिकारों में बंदा से रक्त के संबंध में स्र्वप्रथम हिसाब लिया जाएगा,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:"क़यामत क दिन स्र्वप्रथम लोगों में रक्त का निर्णय किया जाएगा"।[5]

7.उस दिन मनुष्य यदि अपने बुरे कार्यों का इन्कार करेगा,तो उसके शरीर के अंग उसके विरुद्ध गवाही देंगे,अतःउसके कान,उसकी ऑखें और उसका त्वचा उसके विरुध गवाही देंगे,अल्लाह का कथन है:

﴿ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون * حتى إذا ما جاءوها **شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم بما كانوا يكسبون** * وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا قالوا أنطقنا الله الذي أنطق كل شيء وهو خلقكم أول مرة وإليه ترجعون﴾

[5] इसे बोखारी(6533)और मुस्लिम(1678)ने इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्णित किया है।

अर्थातःऔर जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक के ओर लाए जाएंगे और उन(सब)को जमा कर दिया जाएगा।यहां तक कि जब बिल्कुल नरक के निकट आजाएंगे और पर उनके कान और उनकी ऑखें और उनके त्वचे उनके कार्यों की गवाही देंगी।यह अपने त्वचों से कहेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी,वे उत्तर देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की शक्ति पदान की जिसने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की है,उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी के ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

ह़सन बसरी अल्लाह के इस कथनः(كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا)की व्याख्या में फरमाते हैंःए इब्ने आदम!तेरे रचनाकार ने तेरे साथ न्याय किया,तेरी हस्ती को ही तेरा समीक्षक बना दिया।इब्ने जरीर त़बरी ने अपनी तफसीर के अंदर उपरोक्त आयत की व्याख्या में क़तादा का यह कथन अंकित किया है किःउस दिन वह भी पढ़ने लगेगा जो दुनिया में पढ़ना नहीं जानता था।

8.ए मुसलमानो!उस दिन सत्तर हजार लोग हिसाब व किताब से अपवादित होंगे,उनसे न हिसाब व किताब होगा और न उन्हें यातना दी जाएगी—अल्लाह तआ़ला हमें भी उनमें सम्मिलित फरमाए—वे पक्के ईमान वाले होंगे,जिन्हों ने वे समस्त आज्ञा का पालन किया जो अल्लाह ने उन पर अनिवाय किया,पुण्य एवं भलाई के कार्यों में जल्दो की,वर्जित एवं अनुचित कार्यों से बचे रहे।

अबू अमामा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में इस बात का प्रमाण है कि उस प्रभुता से सम्मानित होने वाले लोगों की संख्या इससे अधिक होगी,आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"मेरे रब ने मुझसे वादा किया है कि वह मेरी उम्मत में से सत्तर हजार लोगों को स्वर्ग में दाखिल करेगा,न उनका हिसाब होगा और न उन पर कोई यातना,(फिर)प्रत्येक हजार के साथ सत्तर हजार होंगे,और उनके अतिरिक्त मेरे रब की **मुठ्ठियों** में से तीन **मुठ्ठियों** के बराबर भी होंगे"।[6]

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

---

[6] इसे तिरमिज़ी इत्यादि ने वर्णित किया है,और उपरोक्त शब्द तिरमिज़ी के हैंः(2437),इसकी सनद को अल्बानी रहीमहुल्लाहु ने सही कहा है,जैसा कि "अस्सह़ीहा"में है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

9.अल्लाह आप पर कृपा करे!आप जान लें कि हिसाब व किताब मनुष्य एवं जिन्नात दोनों में सम्मिलित है,क्योंकि जिन्नात भी संदेशवाहण की समानता के संबोधित हैं,जैसा कि ज्ञात है,वह भी (शरीअ़त के)मोकल्लफ हैं,अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

﴿قال ادخلوا في أمم قد خلت من قبلكم من **الجن** والإنس في النار﴾

अर्थातःअल्लाह तआ़ला फरमाएगा कि जो समुदाय तुम से पश्चात गुजर चूके हैं जिन्नों में से भी एवं मनुष्यों में से भी,उनके साथ तुम भी नरक में जाओ।

तथा अल्लाह तआ़ला स्वर्ग के हूरो के प्रति फरमायाः ﴿لم يطمثهن إنس قبلهم ولا **جان**﴾

अर्थातःइससे पहले किसी मनुष्य अथवा जिन्न ने उनको हाथ नहीं लगाया।

यह आयत साक्ष्य है कि स्वर्ग में जिन्न भी होंगे जो मनुष्यों के जैसे उसमें प्रवेश करेंगे,जब उन्हों ने संदेशवाहकों का कहा माना होगा।

10.अल्लाह के बंदो!उस दिन अल्लाह तआ़ला पशुओं को एक दूसरे से क़िसास(बदला)दिलाएगा,अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"(क़यामत के दिन)हक़दारों को उनका पूरा पूरा अधिकार दिया जाएगा,यहां तक कि सींग वाली बकरी से बिना सींग वाली बकरी का बदला लिया जाएगा"।[7]

मतलब यह कि बिना सींग की बकरी का क़िसास उस सींग वाली बकरी से लिया जाएगा जिसने उसे सींग मारा होगा,पवित्र है वह अल्लाह जिसने अपने न्याय एवं नीति से हमारे बुद्धियों हो हैरान कर दिया।

ए अल्लाह के बंदो!ये वे दस चीजे हैं जो क़यामत के दिन के हिसाब व किताब एवंज जज़ा व सजा पर ईमान लोने में शामिल हैं,अल्लाह तआ़ला हमें उन लोगों में शामिल फरमाए जो अपना नामाए आ़माल(कार्य सूची) दाएं हाथ से प्राप्त करें और उनका हिसाब व किताब आसान होगा।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी

[7] इसे मुस्लिम(2582)ने रिवायत किया है।

से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शाति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

- اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com